RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2018-20

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 9 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 13 मई, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

POSTAGE PRE-PAID
MAIL BUSINESS CENTRE
10 MAY 2018

वर्ष-75, अंक : 9, 10-13 मई 2018 तदनुसार 30 वैसाख सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

हम कल्याणकारी, निर्दोष मार्ग पर चलें

लेo-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम्।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

-ऋ. ६।५१।१६

शब्दार्थ-हम **स्वस्तिगाम्** = सुखपूर्वक ले-जाने वाले **अनेहसम्** = निर्दोष **पन्थाम्** = मार्ग को **अपि** = ही **अगन्महि** = प्राप्त करें, चलें **येन** = जिससे मनुष्य **विश्वाः** = सम्पूर्ण **द्विषः** = द्वेषभावों को **परि+वृणक्ति** = सर्वथा त्याग देता है और **वसु** = धन **विन्दते** = प्राप्त करता है।

व्याख्या-हे पथिकृत्! मार्ग-निदर्शक। पथ-प्रदर्शक! संसारारण्य में आकर हम मार्ग भूल गये। किधर जाएँ और किधर न जाएँ? हे गुरो! यहाँ मार्ग बताने वाला भी कोई नहीं है, किससे पूछें? क्या भटक-भटक कर सिर पटक-पटककर मर जाएँ? प्रभो! अन्त में भी तू ही मार्ग दिखलाएगा और संसार-जङ्गल से पार लगाएगा, तो अभी से ही ऐसी कृपा क्यों नहीं करता? प्रभो! अभी से, अभी से कृपया-**'सं पूषन् विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति। य एवेदमिति ब्रवत्'** = [ऋ० ६।५४।१] = ऐसे विद्वान् से मिला, जो स्पष्ट उपदेश करता हो और भगवन्! 'यह ऐसा है' इस प्रकार जो कह सकता हो। अस्पष्ट, सन्दिग्ध बात करने वाले से हमें दूर हटा। उसे भी कल्याण-मार्ग दिखा। जिसे स्वयं संशय है, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का निश्चय नहीं है, वह दूसरों को निर्भय होकर कैसे बता सकता है? अतः हमें तो अग्रे! प्रभो! असन्दिग्ध, संशय-शून्य विद्वान् से मिला, ताकि-**'अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम्'** = हम सुखपूर्वक ले-जाने वाले, निष्पाप मार्ग पर ही चलें। पथ-प्रदर्शक प्रभो! यह तभी हो सकता है, जब तू या तेरा कोई प्यारा मार्ग दिखलाये। प्रियतम! हमें तो तेरे प्यारों की भी पहचान नहीं है कि तेरे प्यार को पाएँ, अतः प्रभो! तू ही कृपा कर। परमात्मन्! दुर्गुणनाशकारिन्! कुकामकुलोभनिवारक! भद्रकारक! हमें ऐसे मार्ग पर चला, जिस पर चलकर मनुष्य-**'विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु'** = सम्पूर्ण द्वेष-भावनाओं को त्याग देता है और धन पाता है।

मैं किसी से द्वेष न करूँ। मुझसे कोई वैर-विरोध न करे! सबसे प्रीतिपूर्वक यथायोग्य धर्मानुसार व्यवहार करूँ और सब मुझसे स्नेह से, प्रीति से, प्यार से व्यवहार करें। भगवन्! द्वेषरूपी डाकू हमारे प्रेमधन का अपहरण कर रहा है। इसे हमारे हृदय-मन्दिर से बाहर करने का बल दे, जिससे हम धन की रक्षा कर सकें और तेरा प्रीतिरूप धन प्राप्त कर सकें-**'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु'** [अथर्व० १९।१५।६]= सभी दिशाएँ मेरी मित्र हों। कहीं भी कोई मेरा वैरी न हो, अप्रीति करने वाला न हो। सब-के-सब सबसे प्रीति करने वाले हों और हम सब-**'तस्य ते शर्म्मन्नुपदद्यमाने राया मदेम तन्वा तना च'** [ऋ० ६।४९।१३]= तुझ ऐसे कृपालु की कल्याणशरण प्राप्त होने पर धन-धान्य, तन-सन्तान से आनन्दित हों। पुष्टिदातः! **'न रिष्येम कदा चन'** [ऋ० ६।५४।९]=हम कभी पीड़ित न हों।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

आगामी आर्य महासम्मेलन बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन 11 नवम्बर 2018 को बरनाला में आयोजित किया जा रहा है। इसलिये पंजाब की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वह इन तिथियों में अपनी अपनी आर्य समाज का कोई कार्यक्रम न रखें और इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिये पूरी शक्ति से जुट जाएं। आपके सहयोग से इससे पूर्व 17 फरवरी 2017 को लुधियाना और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सफल आर्य महासम्मेलन कर चुकी है। आशा है इस आर्य महासम्मेलन में भी आप का पूरा पूरा सहयोग मिलेगा।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीनामरान्न नेमि परिता बभूव।।

-ऋ० १.३२.१५

भावार्थ-वह प्रबल राजा इन्द्र, स्थावर, जंगम, शान्त और लड़ाके प्राणियों पर भी शासन कर रहा है। जैसे रथचक्र की धार, सब अरों को घेरे हुए है ऐसे ही वह इन्द्र जगत् के जड़ चेतन प्राणी अप्राणी सब को घेरे हुए हैं। उस इन्द्र के शासन में ही सब मनुष्य पशु पक्षी आदि वर्त्तमान हैं। उसके शासन का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता।

न किरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतानाम्।
न किर्वक्ता न दादिति।।

-ऋ० ८.३२.१५

भावार्थ-उस भगवान् इन्द्र की शक्तियों का और उसकी सत्य और मीठी वाणियों का नियम बांधने वाला कोई नहीं है और कोई नहीं कह सकता कि इन्द्र ने मुझे कुछ नहीं दिया, क्योंकि सब को सब-कुछ देने वाला वह इन्द्र ही है।

सत्यार्थ प्रकाश के सभी समुल्लास का संक्षिप्त विवरण

डॉ.-अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

हमने सत्यार्थ प्रकाश का नाम अनेकों बार सुना है और हमारे बहुत से हिन्दू युवाओं और युवतियों को इसके बारे में जानने की जिज्ञासा सदा बनी रहती है, इसलिये अब सत्यार्थ प्रकाश की विषय सूची को सबके लिये खोलकर लिखा जाता है-

सत्यार्थ प्रकाश में कुल 14 समुल्लास (अध्याय) हैं। जिनमें से पहले 10 तो वेद आधारित वैदिक धर्म के मंडन पर लिखे हैं और शेष ४ अवैदिक मत मतांतरों के खंडन पर लिखे गए हैं।

ये 14 समुल्लास इस प्रकार हैं-

1. (१.) प्रथम समुल्लास- इस पूरे ब्रह्माण्ड में ईश्वर से सर्वश्रेष्ठ और कोई नहीं है। ईश्वर ने ही मनुष्यों की हर प्रकार की उन्नति के लिये वेद में पूरे ब्रह्माण्ड का ज्ञान विज्ञान दिया है। उसी ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम 'ओ३म्' है और वेद में इसी एक ईश्वर के बहुत सारे नाम हैं जैसे कि रुद्र, मित्र, शिव, विष्णु, प्रजापति, इन्द्र, सूर्य, वरुण, सोम, पर्वत, लक्ष्मी, सरस्वती आदि। तो इस समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने ऐसे मुख्य अत्यन्त प्रसिद्ध १०० नामों की व्याख्या की है। जिससे कि ईश्वर के स्वरूप के बारे में सबकी शंकाओं का समाधान हो जाए।

2. (२.) द्वितीय समुल्लास- इस समुल्लास में संतानों की शिक्षा के बारे में लिखा गया है क्योंकि बिना शिक्षित हुए मनुष्य पशु के समान होता है। हम मनुष्य में तो स्वाभाविक व्यवहार भी बिना शिक्षा के नहीं आता है। इसी कारण बिना विद्या के मनुष्य अनेकों छल-कपट भूत पिशाच, चुड़ैल आदि में मिथ्या विश्वास और उनको दूर करने का ढोंग करने वाले पाखंडियों के जाल में फँसकर अपने धन, सम्मान, ऊर्जा, समय आदि नष्ट करते हैं। तभी ऋषि ने ये लिखा है कि जो मनुष्य अपनी संतानों को सुशिक्षित नहीं करते वे अपनी संतानों के परम शत्रु हैं।

3. (३.) तृतीय समुल्लास- इस समुल्लास में ऋषि ने पठन पाठन की व्यवस्था पर प्रकाश डाला है कि पढ़ना लिखना किस प्रकार का होना चाहिए। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, प्रमाणों के आधार पर परीक्षा करके सत्य और असत्य को जानना, पढ़ने योग्य वेद और आर्ष ग्रंथ, त्याग करने योग्य शुद्ध ग्रंथ, ब्रह्मचर्य की अवधि, गायत्री महामंत्र के अर्थ सहित जाप की विधि, प्राणायाम के चार प्रकार, आचमन सहित संध्योपासना, यज्ञ अग्निहोत्र समेत पंच महायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ)। इन विषयों पर प्रकाश डाला है जो कि मनुष्य को सुशिक्षित करने हेतु हैं। यही वो शिक्षा है जिससे कि हमारे आर्यावर्त देश में राम, कृष्ण, जैमिनी, अहिल्या, कणाद, कपिल, गौतम, भारद्वाज, गार्ग्य, आग्रगायण, सीता, सावित्री, रुक्मिणी, पतंजली, पाणीनि आदि उत्पन्न हुए हैं और इसी गुरुकुलीय शिक्षा और आर्ष पाठ्यक्रम को लागू करके वैसे ही सभ्य मनुष्य उत्पन्न करने के उद्देश्य से ये समुल्लास लिखा गया है।

4. (४.) चतुर्थ समुल्लास- जैसा कि कहा गया है कि चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम सर्वोत्तम माना गया है। क्योंकि ये आश्रम ही बाकी के तीनों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास) का पोषण करता है। इसलिए इसमें विवाह और उसके ८ प्रकारों पर प्रकाश डाला गया है। विवाह किन-किन स्त्री पुरुषों का होना चाहिए? किनका विवाह उत्तम होता है? किन-किन को विवाह करने का अधिकार नहीं है? उत्तम गुणों वाली संतानें कैसे उत्पन्न हो सकती हैं? विवाह करने में किन गुणों और दोषों को विचारना चाहिए? विधवा विवाह। नियोग विषय आदि पर महर्षि ने वेदमंत्रों और अन्य शास्त्रीय प्रमाणों से उत्तम गृहस्थी की रचना कैसे की जाए? इन सब विषयों पर प्रकाश डाला है।

5. (५.) पञ्चम समुल्लास- हमारी संस्कृति के आधार हमारे चार वर्णाश्रम हैं। हमारे जीवन की तीन चौथाई भाग वन में बीतता था। (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, सन्यास)। जिनमें अंतिम दो वानप्रस्थ और सन्यास जिनमें प्रत्येक मनुष्य को वन में रहकर समाज के हित में कार्य करना होता है। जब तक वानप्रस्थ और सन्यास की परम्परा हमारे देश में रही तब तक हमारे देश को तपस्वी वेद प्रचारक, गुरु शिक्षक आदि प्राप्त होते रहे लेकिन जब से ये सब बंद हुआ। तब से बुढ़े होकर रिटायर होकर घर में व्यर्थ बैठे पोते पोतियों के मोह में बेटे बहु के ताने सुनकर पारिवारिक माहौल खराब किया और समाज को भी कोई लाभ न हुआ। इसी कारण राष्ट्र दुर्दशा को प्राप्त हुआ। इस समुल्लास में किन-किन लोगों को वानप्रस्थी या सन्यासी होना चाहिए? और उनके क्या-क्या कर्तव्य होने चाहिएँ? इस पर लिखा गया है।

6. (६.) षष्ठ समुल्लास- इसमें ऋषि ने मनुस्मृति आधारित राजतंत्र विषय पर लिखा है। क्योंकि जब तक हमारे देश में ऋषियों ने राजतंत्र रखा। तब तक हमारा देश पूरे विश्व में चक्रवर्ती शासन करने में अत्यन्त समर्थ था और पूरी दुनिया को एकजुट करते हुए वैदिक धर्म के अधीन रखकर सुख और शांति बनाए रखी। पूरे विश्व में कभी आर्यों का चक्रवर्ती शासन था। जब से मनु का राजतंत्र लुप्त हुआ। तब से आर्य शासन खंडित होता गया और पूरी पृथिवी पर से वैदिक धर्म घटता गया। क्योंकि मनुस्मृति में राजा के कर्तव्य, उसकी दिनचर्या, शिक्षा, प्रजा से संवाद, दान, वर्णव्यवस्था की रक्षा और राज्य में योजनाएँ आदि लागू करवाना आदि लिखा है। इसी के प्रमाण मनुस्मृति से देकर ऋषि दयानंद ने मनु के राजतंत्र को सुदृढ़ करके देश को वहीं आर्यावर्त बनाने के संकल्प से लिखा था। क्योंकि उनका मानना था कि राजा के अधीन प्रजा और प्रजा के अधीन राजा रहें तो शासन निरंकुश नहीं होता। महर्षि चाहते थे कि हिन्दू के हाथ से खोया हुआ उसका चक्रवर्ती शासन उसे पुनः प्राप्त हो जाए और पृथिवी पर पनप रहे। अवैदिक इस्लाम-ईसाई मत आदि का दमन करके उनका समूल नाश करके केवल एकछत्र वैदिक राष्ट्र ही पूरी पृथिवी पर लागू किया जाए।

7. (७.) सप्तम समुल्लास- इस समुल्लास में ऋषि दयानन्द जी ने वेद और ईश्वर विषय पर लिखा है। क्योंकि आदिकाल में सृष्टि की रचना करके ईश्वर ने हम मनुष्यों की मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, सामाजिक हर प्रकार की उन्नति करने के लिये वेद का ज्ञान चार उत्कृष्ट ऋषियों के द्वारा दिया जिन्होंने आगे ब्रह्मा ऋषि और फिर आगे गुरु शिष्य परम्परा में ये ज्ञान मनुष्य जाति में फैलता गया। इस समुल्लास में ऋषि दयानंद जी ने अनेकों वेदमंत्र और कई दर्शन शास्त्रों के प्रमाण देकर ईश्वर के स्वरूप को सिद्ध किया है ताकि किसी को ईश्वर के विषय में कोई शंका न रहे और वेद जो कि ईश्वर का नित्य ज्ञान है। उसकी नित्यता के बारे विचार किया है।

8. (८.) अष्टम समुल्लास- यह आठवाँ समुल्लास सृष्टि के त्रैतवाद विषय पर लिखा गया है। क्योंकि यह सृष्टि तीन कारणों (परमात्मा, जीव, प्रकृति) से उत्पन्न हुई है। जिस कारण इनको क्रम से (निमित्त कारण, साधारण कारण, उपादान कारण) भी कहा गया है। इस त्रैतवाद विषय को सरल ढंग से समझाने के लिये ऋषि ने इसमें वेदमंत्रों का प्रमाण दिया हैं क्योंकि ईश्वर की रचना को ईश्वरीय ज्ञान वेद ही समझाने में समर्थ है और उसके आधार पर ऋषियों द्वारा लिखे तर्क शास्त्र भी इस रचना को समझने में सहायक होते हैं।

9. (९.) नवम समुल्लास- इसमें ऋषि ने बँधन और मुक्ति अर्थात् मोक्ष के विषय में लिखा है। ताकि मनुष्य पातंजल योगशास्त्र के अनुसार ईश्वरोपासना करके अपने अंदर का मिथ्याज्ञान नष्ट कर तत्वज्ञान प्राप्त कर ले। इसी को समझाने के लिये ऋषि ने ब्रह्म तत्व, उसके ज्ञान, बल, सामर्थ्य आदि को समझाते हुए बँधन के कारण और उसके नाश करने की विधि को संक्षेप में इस समुल्लास में लिखा है।

10. (१०.) दशम समुल्लास-कोई भी मनुष्य समाज में उत्तम व्यवहार किए बिना सुख को प्राप्त नहीं हो सकता। कम पढ़ा लिखा मनुष्य भी उचित व्यवहार करके समाज में सम्मान का पात्र बन जाता है तो दूसरी ओर अधिक पढ़ा लिखा भी अनुचित व्यवहार करके अपमानित और तिरस्कृत होता है। इसीलिये ऋषि ने मनुष्यों को उत्तम व्यवहार और भक्ष्य एवं अभक्ष्य पदार्थों के विषय में शिक्षा देते हुए ये समुल्लास लिखा है।

11. (११.) एकादश समुल्लास-महाभारत काल से पहले तक पूरे विश्व में केवल वैदिक धर्म ही फैला हुआ था और हमारा देश आर्यावर्त पूरी दुनिया का केन्द्र था। हमारे आर्य राजाओं का चक्रवर्ती शासन था। पूरी दुनिया के राजा हमारे देश को कर देते थे। हमारे वेद प्रचारक ऋषिमुनि पूरे विश्व में वेद प्रचार को जाते थे। महाभारत के भीष्ण युद्ध में हमारे प्रचारक मारे गए और पूरा विश्व वेद की शिक्षा से रहित

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

मदर्ज डे मनाने की सार्थकता

पूरे विश्व की संस्कृति में भारतीय संस्कृति ही ऐसी संस्कृति है जिसमें माता-पिता को भगवान का दर्जा दिया जाता है। हमारी भारतीय संस्कृति के आदर्श इतने उज्जवल और प्रेरणादायक हैं कि कोई भी इन आदर्शों को धारण कर अपने मनुष्य जीवन को सार्थक कर सकता है। हमारी संस्कृति में मदर्ज डे और फादर्ज डे जैसे पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित दिवसों का कोई महत्व नहीं है। पाश्चात्य संस्कृति में साल में एक बार मदर्ज डे और फादर्ज डे मनाया जाता है परन्तु प्रतिदिन हमारी भारतीय संस्कृति में माता और पिता की सेवा एवं उनकी आज्ञा का पालन करने का आदेश है और जो अपने माता-पिता तथा बुजुर्गों को अपनी सेवा शुश्रूषा के द्वारा प्रसन्न करता है उन्हें क्या मिलता है, इसका वर्णन नीतिकार ने बहुत सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है-

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।

अर्थात् जो बच्चे अपने माता-पिता और वृद्ध जनों का नित्य पैर छू कर आशीर्वाद लेते हैं, उन्हें अपनी सेवा के द्वारा प्रसन्न करते हैं उनके अन्दर चार गुणों की वृद्धि होती है। वे चार गुण हैं-आयु, विद्या, यश और बल। इस प्रकार हमारी भारतीय संस्कृति हमें उच्च आदर्शों का पालन करना सिखाती है।

आज पाश्चात्य संस्कृति के कारण हमने अपने आदर्शों को केवल एक दिन तक सीमित कर दिया है। वर्ष में एक बार उस दिवस को मनाया और फिर अपने कर्त्तव्य से मुक्त। इसी संस्कृति के चलन के कारण आज वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ती जा रही है क्योंकि आजकल के बच्चों के पास अपने माता-पिता के लिए समय नहीं है। जिस घर में माता-पिता ने अपनी संतान को पाल-पोष कर बड़ा किया, वही घर उनके लिए पराया हो जाता है। अभी तीन-चार दिन पहले की घटना है कि एक बुजुर्ग को दो बेटियां बस में अकेला छोड़ कर चली गई। जब वह बुजुर्ग करतारपुर में बस से उतरा तो इधर-उधर भटकने लगा। लोगों के द्वारा पूछने पर उसने रोते-रोते बताया कि उसका नाम प्यारा सिंह है तथा अमृतसर के गांव मैसमपुर का रहने वाला है। उसकी दो बेटियां हैं जिन्होंने उसकी जायदाद अपने नाम करवा ली है एवं उसका घर भी करीब 8-10 लाख में बेच दिया है। बुजुर्ग के अनुसार बस में उसके साथ दोनों बेटियां थी जो उसे बस में छोड़कर कहीं चली गई। इसके बाद वह भटकता हुआ करतारपुर में आ गया। समाज में घट रही ऐसी घटनाओं को देखकर लगता है कि इन्सान के अन्दर की संवेदना मर चुकी है। बच्चों के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने वाले माँ-बाप को कैसे दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर किया जाता है। यही घटनाएं हमारी संस्कृति तथा समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रही हैं।

सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी शतपथ ब्राह्मण का वचन उद्धृत करते हुए लिखते हैं कि- मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरूषो वेद। अर्थात् तीन उत्तम शिक्षक माता, पिता और आचार्य के द्वारा मनुष्य ज्ञानवान बनता है। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। इसीलिए मातृमान् अर्थात् प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान् धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे अर्थात् सन्तान के निर्माण का दायित्व गर्भाधान से ही शुरू हो जाता है। गर्भाधान से ही माता का दायित्व शुरू हो जाता है कि वह ऐसे संस्कार और विचारशक्ति अपनी सन्तान को दें जिससे वे शिवाजी, महाराणा प्रताप, भगत सिंह, लक्ष्मीबाई, दुर्गा जैसे बन सकें। जो राष्ट्र निर्माण की क्षमता रखते हों। जहां पर माता-पिता के द्वारा इस कर्त्तव्य की अवहेलना की जाती है वहीं पतन शुरू हो जाता है। आज बढ़ रहे वृद्धाश्रमों का एक कारण यह भी है कि बच्चों को वे संस्कार नहीं मिल रहे हैं जिन संस्कारों के द्वारा उसके जीवन का समुचित विकास हो। उसे अपने माता-पिता के प्रति कर्त्तव्यों का बोध हो।

मातृदिवस के अवसर पर माताओं एवं बच्चों को इस बात का बोध कराने की आवश्यकता है कि कौन-कौन अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा है। क्या माँ अपनी सन्तान के प्रति कर्त्तव्य का पालन कर रही है? अगर एक माँ अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपनी सन्तान को सभ्य, संस्कारवान एवं सुशिक्षित बनाने का संकल्प लेकर उनके जीवन का निर्माण करेगी तो वही सभ्य और संस्कारवान संतानें प्रतिदिन मातृदिवस एवं पितृदिवस मनाएंगी। विचार का विषय यही है कि माता-पिता सन्तान के प्रति और सन्तान माता-पिता के प्रति अपने कर्त्तव्यों को समझें और उन कर्त्तव्यों का पालन करे। साल में एक बार मातृदिवस मनाकर हम अपने कर्त्तव्य की पूर्ति नहीं कर सकते। हमारी संस्कृति में तो प्रतिदिन मातृदिवस मनाने की आज्ञा है अर्थात् प्रतिदिन सुबह उठकर माता-पिता के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लेकर उनकी आज्ञाओं का पालन करें। मातृदिवस मनाने का सही तात्पर्य यही है कि समाज में जो बुराईयां फैल रही हैं उन बुराईयों को दूर करने में माता-पिता और बच्चे अपना योगदान दें। आज एक तरफ जहां मातृ-पितृ दिवस पर लम्बे चौड़े भाषण दिए जाते हैं वहीं दूसरी ओर वृद्धाश्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। बुजुर्ग अपने ही घर में अपने आपको असहाय महसूस कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में इन दिवसों के मनाने का क्या औचित्य रह जाता है इसका अनुमान आप स्वयं लगा सकते हैं। क्यों ऐसी परिस्थितियां आती हैं कि जिस घर में माता-पिता अपनी सन्तान को पाल-पोस कर बड़ा करते हैं समय आने पर वही घर उनके लिए बेगाना हो जाता है। कहीं न कहीं माता-पिता के द्वारा दिए गए संस्कारों में भी कमी रह गई है, उनसे भी उपेक्षा हो गई है जिसके कारण ये दिन आते हैं। समाज में फैल रही बुराईयों का एक मुख्य कारण यह भी है कि सन्तान का निर्माण करते समय माता-पिता अपने कर्त्तव्य का अच्छी तरह निर्वहन नहीं कर पाए हैं। पैसे की अन्धी दौड़ के कारण उन्होंने जीवन के अत्यधिक महत्वपूर्ण पहलू की उपेक्षा कर दी है। जितनी-जितनी उपेक्षा जीवन के इस महत्वपूर्ण पहलू की होगी उतना-उतना समाज निम्न स्तर की ओर अग्रसर होगा। संस्कारित संतान को ही माता-पिता, समाज, राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य का बोध होता है। इसलिए प्रत्येक माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वे अपने दायित्व का अच्छी तरह निर्वहन करे ताकि संतान सभ्य और सुसंस्कृत बने।

वर्तमान में मातृ दिवस जिसे मदर्ज डे कहा जाता है उसे जिस ढंग से मनाया जाता है उसका कोई औचित्य नहीं है। मातृदिवस मनाते हुए आज हमें अपनी संस्कृति और सभ्यता को नहीं भूलना चाहिए। हमारी संस्कृति में प्रत्येक दिन मातृ-पितृ दिवस है। इसी कारण हमारी संस्कृति का गौरव गान विदेशी भी करते हैं। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम को कौन भूल सकता है जिन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए राज-पाट को छोड़कर वनवास ग्रहण किया। श्रवण कुमार की मातृ-पितृ भक्ति को कौन भूल सकता है जिसने अपने अन्धे माता-पिता की इच्छा पूरी करने के लिए अपने आपको न्यौछावर कर दिया। ये है मातृ-पितृ दिवस मनाने की सार्थकता। इसलिए अगर इस दिवस को मनाने के साथ-साथ हमें अपने बच्चों को अच्छे संस्कारों एवं विचारों से युक्त करना है जिससे वे अपनी जन्मदात्री माँ के साथ-साथ, अपनी मातृभूमि एवं गौ माता के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन कर सके।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

यज्ञ मूल उद्भावना और प्रयोजन

ले०-डॉ० सीमा कंवर #1498, सैक्टर 43बी, चण्डीगढ़

वेदों में यज्ञों द्वारा ही भगवान की पूजा और प्राप्ति का विधान किया गया है। ''**यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।**

ते ह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

(ऋ० 10.90.16.)

अर्थात् सत्यनिष्ठ विद्वान लोग यज्ञों द्वारा ही पूजनीय परमेश्वर की पूजा करते हैं। यज्ञों में सब श्रेष्ठ धर्मो का समावेश होता है। यज्ञों द्वारा भगवान की पूजा करने वाले महापुरुष दु:खरहित मोक्ष प्राप्त करते हैं। जहां सब ज्ञानी लोग निवास करते हैं।

नाना प्रकार के रोग, व्याधि और देवी आपदाओं जैसी विसंगतियों को दूर करने के लिए हमारे प्राचीन ऋषियों ने पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक में स्थित पर्यावरण को संतुलित रखने वाली प्राकृतिक शक्तियों का गहन अध्ययन किया और उन्हें मानव की शक्ति से परे का समझकर उनके स्वरूप के अनुसार उन शक्तियों को विभिन्न देवताओं के रूप में कल्पित किया। जबकि मूलरूप से शक्ति एक होने पर भी उपाधिभेद से नाना प्रकार की है। उसी प्रकार देवता भी मूलतः एक और अभिन्न होने पर भी बाह्यदृष्टि से अनेक एवं भिन्न हैं। उन शक्तियों को यथावत् तथा अपने अनुकूल बनाए रखने के लिए ऋषियों ने नाना कर्मों से उनकी आराधना की। इन्हीं कर्मों में यज्ञ भी एक श्रेष्ठतम कर्म है, जिसके माध्यम से दैवरूपी प्राकृतिक शक्तियों को उद्बुद्ध एवं सक्रिय किया जाता है।

'यज्ञ' शब्द देवपूजा, संगतिकरण और दान अर्थ वाली यज् (धातु) से निष्पन्न है, जिसका तात्पर्य है- प्राणरूप देवशक्तियों को प्रसन्न करना, दो तत्त्वों के मेल से नूतन तत्त्व का निर्माण करना अथवा अखिल जगत् में प्रवर्तित आदान-प्रदान की सतत् प्रक्रिया में संतुलन बनाए रखना। यज्ञ की यह प्रक्रिया प्रकृति में निरन्तर चली रहती हैं। जिसके परिचालक देवता आदित्यरूप अग्नि और सोम हैं। सूर्यरूपी अग्नि अनवरत प्रकृति से सोमरूपी अन्न की आहुति ग्रहण (भक्षण) करता रहता है और अपनी शक्ति को पुष्ट करता रहता है, यही कारण है कि सूर्य से रात-दिन अनन्त ऊर्जा निकलती रहती है तथा अखिल ब्रह्माण्ड में फैलती रहती है (सोमेन अदित्या बहिनः) तथापि उसकी शक्ति क्षीण नहीं होती। इसलिए इस प्रपंच को ''अग्निषोमात्मक'' कहा जाता हैं। हमारे शरीर में भी यही क्रिया चलती रहती है। जठराग्नि के रूप में यहाँ विद्यमान् वैश्वानर अग्नि भी नित्यशः अन्न (भोज्य पदार्थ) की आहुति ग्रहण करता है जिससे शक्ति-सम्वर्द्धन होता रहता है। इसी प्राकृतिक यज्ञ की भाँति ऋषियों ने भी यज्ञ करना प्रारम्भ किया जिससे प्राकृतिक शक्तियाँ क्षीण न हों तथा उनमें विसंगतियाँ उत्पन्न न हों और वे वातावरण को शुद्ध बनाकर पर्यावरण में संतुलन बनाए रखें। स्वयं 'यज्ञ' शब्द से भी यह बात सिद्ध है, क्योंकि यह शब्द यज् धातु से निष्पन्न है, जिसका एक अर्थ संगतिकरण भी है। अतः निश्चयेन यज्ञ से प्राकृतिक शक्तियों में संगति स्थापित की जाती हैं इसलिए भी यह सर्वाधिक उपयुक्त कर्म है।

यज्ञ वस्तुतः ब्रह्माण्ड का केन्द्रबिन्दु एवम् उद्भवस्थल भी है। 'तैत्तिरीय-ब्राह्मण में इसी को भुवनरूप स्वीकार किया गया हैं। अनेक मन्त्रों से ऋत तथा यज्ञ की अभिन्नता सी) है। 'शतपथ-ब्राह्मण' के अनुसार यज्ञ ऋत का कारण है जो शाश्वत नियमों का पर्याय है। उसी 'ऋत' के अन्तर्गत समग्र सृष्टि नियन्त्रित है। उसी को सार्वभौम सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है तथा वही परमेष्ठी स्वीकार किया गया है। जिसका कोई अतिक्रमण नहीं कर सकता। उसी ऋत के अन्तर्गत यह भूमि प्रतिष्ठित है। अतः ऋतरूप यज्ञ-तत्त्व ब्रह्म से अभिन्न माना गया है। 'गीता' में भी ब्रह्म को यज्ञ में प्रतिष्ठित माना गया है। अतः विश्व की सत्ता यज्ञ में निहित है तथा सृष्टि के अंत में यहीं अवशिष्ट रहता है।

'ऊर्ज' प्राणिमात्र के लिए आवश्यक तत्त्व हैं जिससे उन्हें बल और प्राण प्राप्त होता है। वे सभी तत्त्व ऊर्ज हैं जिनसे मनुष्य दैहिक तथा आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करता है। औषधियों का उत्तम रस एवम् अन्न का सार ऊर्ज है। तात्पर्य यह है कि ऊर्ज शक्ति का नामान्तर है। प्राकृतिक शक्तियाँ ही ऊर्जा का स्त्रोत है। इसलिए हमारा श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ भी इस 'ऊर्ज' की प्राप्ति के लिए संचालित होता है। अतएव यज्ञ केवल कर्मकाण्ड मात्र नहीं प्रत्युत ब्रह्माण्ड में कार्यरत प्रकृति की अनन्त शक्तियों में परस्पर समन्वय एवं सामंजस्य स्थापित करने के लिए ऊर्जा प्रदान करता है। सभी शक्तियों के अधिष्ठात्री देवता यज्ञकर्म से सन्तुष्ट होते हैं। तभी उनमें समरूपता आती है। उन विराट् महाशक्तियों को अनुरूप बाँधे रखने का मूल उद्देश्य यज्ञ-सम्पादन से ही सम्भव होता है। अग्नि में निक्षिप्त आहुतियाँ भस्म होकर कभी नष्ट नहीं होती बल्कि अग्नि की महाशक्ति तत्तदेवताओं के निमित्त प्रक्षिप्त इन आहुतियों की गन्ध को सूक्ष्म रूप में उन-उन देवताओं तक पहुंचाता है तथा हविर्गन्धि पाकर इन महा-शक्तियों के अधिष्ठातृ देवता प्रसन्न हो उठते हैं। जिसके परिणामस्वरूप प्रकृति में तनाव नहीं रहता, क्योंकि यज्ञ ब्रह्माण्ड का केन्द्रबिन्दु है। तथा यही विश्व का भरण-पोषण करता है और सत्ता में रखता है।

यज्ञ-मनुष्य की मानसिक और वाचिक शुद्धि भी करता है। क्योंकि यज्ञ करते समय सत्य बोलने का संकल्प कराया जाता है। जिस मन्त्र का यज्ञ में उच्चारण किया जाता है, वह भी यज्ञरूपा है, क्योंकि वह ध्वनि प्रदूषण को दूर करती है। इसलिए उसे 'विश्ववायुः' 'विश्वधाया' और 'विश्वकर्मा' कहा गया है। अर्थात् वह सबको दीघार्यु प्रदान कर उनका धारण-पोषण करती है और वातावरण को शुद्ध रखते हुए सभी कार्यों के सुचारु संचालन में सहयोग देती है।

'वाजसनेयि संहिता में यज्ञ को वसु अर्थात् निवासयोग्य संसार को पवित्र करने वाला कहा गया है। क्योंकि यज्ञ के लिए जाने वाले समग्र कर्म पवित्र है, अतः वे सम्पूर्ण वातावरण को पवित्र करते हैं। यह मातरिश्वा अर्थात् वायु का शोधक माना गया है। वायु शुद्धि से दुर्गन्धादि दोष-समूह तथा हानिकारक कीट पतंगादि सन्तप्त होकर नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार यज्ञ वायु को शुद्ध करके वातावरण को शुद्ध बनाता है। इसलिए इसे विश्वधाया कहा गया है। यह 'शतधार' और 'सहस्त्रधार' अर्थात् असंख्य देवों एवं प्राणियों को भी धारण करने वाला बतलाया गया है। 'वाजसनेयि-संहिता' में एकत्र यज्ञ को राक्षसों अर्थात् कीटाणु आदि को सन्तप्त करने वाला तथा दानहीनता की भावना को भी नष्ट करने वाला माना गया है। इसलिए यज्ञ की उदार-उदात्त भावना का उद्देश्य ही वातावरण की शुद्धि के द्वारा सब प्राणियों का कल्याण करना है। इसी को दृष्टिगत करते हुए 'वाजसनेयि संहिता' में ऋषि कहता है कि ''मैं यज्ञानुष्ठान सब प्राणियों के सुख के लिए तथा दरिद्रता के नाश के लिए करता हूँ, दानहीनता के लिए नहीं।''

अतः यज्ञ दानहीनता की भावना को नष्ट करके परस्पर सहयोग का वातावरण भी बनाता है। यज्ञ का जितना अधिक विस्तार एवं प्रसार होगा। उतना ही मनुष्य के स्वभाव में दुष्टता का अभाव होगा और उदारता का भाव उत्पन्न होगा और सर्वत्र सद्भाव का वातावरण होगा। साथ ही पर्यावरण शुद्ध होगा क्योंकि यह सबका संस्कार करना हैं। इस प्रकार यज्ञ भौतिक परिवेश की शुद्धि के साथ व्यापक स्तर पर मनुष्य के स्वभाव की भी शुद्धि करता है।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

सामवेद में ईश्वर-जीव सम्बन्ध

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

वेदों में प्राप्त विवरण के अनुसार ईश्वर, जीव एवं प्रकृति तीनों अनादि है। इनका न जन्म हुआ और न विनाश होगा। सम्पूर्ण सृष्टि का उपादान कारण है प्रकृति। प्रकृति जड़ है। अत: वह स्वयं सृष्टि की रचना नहीं कर सकती है। फिर जीवात्मा चेतन स्वरूप है। वह प्रकृति का आश्रय लेकर कर्म करता है परन्तु उसकी शक्ति सीमित है अत: वह भी सृष्टि का निर्माण करने में असमर्थ है। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप है। वह सर्व शक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक है। वही प्रकृति और जीवात्मा का संयोग कराकर सृष्टि का निर्माण करता है।

सामवेद में ईश्वर एवं जीव के मध्य के आपसी सम्बन्ध पर विचार हुआ है। सामवेद में बताया गया है कि ईश्वर और जीव का आपसी सम्बन्ध पिता-पुत्र, पालक-पालित, दाता-याचक, उपास्य-उपासक, स्वामी-सेवक, राजा-प्रजा, व्याप्य व्यापक, पतित-पावन, कर्मफल प्रदाता-कर्म फल प्राप्त करता तथा मित्रवत् है।

अपने इस कथन की सिद्धि के लिए अब सामवेद के मंत्रों के आधार पर विचार करते हैं।

पिता-पुत्र समान सम्बन्ध-

आ ते वत्सो समान यमत् परमाच्चित्सधस्थात्।

अग्ने त्वं कामये गिरा।।

सामवेद मंत्र संख्या 8

अर्थ-(आ) भली भांति (ते) तेरा (वत्स) पुत्र रूप जीव (मन:) मनन योग्य ज्ञान को (यमत्) प्राप्त करता है। (परमच्चित्) परम प्रभु से (सधस्थात्) साथ रहने वाले अथवा समान स्थान में रहने वाले (अग्ने) हे ईश्वर! (त्वम्) तुमको (कामये) चाहता हूँ (गिरा) स्तुति से।

भावार्थ-हे परमेश्वर! तेरा पुत्र जीव मनन योग्य ज्ञान को प्राप्त करता है। सदा समान स्थान में साथ रहने वाले तुझे चाहता है और तेरी स्तुति करता है।

पालक-पालित सम्बन्ध-

कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते।

गोषाता यस्य ते गिर:।।

सामवेद मंत्र संख्या 34

अर्थ-(कस्य) किसकी (नूनम्) निश्चय ही (परीणसि) अधिकतर (धिय:) बुद्धियों को (जिन्वसि) पूर्ण करता है। (सत्पते) हे सज्जनों के पालक। (गोषाता) वेद वाणियां का भजन करने वाली (यस्य) जिसकी (ते) तेरी (गिरा:) वाणियां।

अर्थ-हे सज्जनों के पालक ईश्वर। तू किनकी बुद्धियों को अधिकतर पूर्ण करता है? उस पुरूष की जिसकी वाणियां वेद वाणियों से युक्त और स्तुति करने वाली हो।

अग्ने जरितर्विश्पति स्तपानो देवरक्षस:।

अप्रोषिवान् गृहपते महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयु:।।

साम. मं सं. 39

अर्थ-(अग्ने) हे ईश्वर! (जरित:) हे स्तुति के योग्य। (विश्पति:) हे प्रजा के पालक। (तपान:) हे तपाने वाले (देव) देव (रक्षस:) दुष्ट को (अप्रोषिवान्) सर्वदा विद्यमान (गृहपते) हे संसार गृह के स्वामी (महान्) महान् (असि) है (दिवस्पायु:) द्युलोक के रक्षक (दुरोण्यु:) हे संसार गृह के निर्माता।

भावार्थ-परमात्मा स्तुति योग्य प्रजापालक, दुष्टों को तपाने वाला, सर्वदा विद्यमान, द्युलोक का रक्षक और संसार गृह का निर्माता है।

दाता और याचक

ये विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्।

मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये।।

साम. मं. सं. 44

अर्थ-(य:) जो (विश्वा) सारे (वसु) धनों को (दयते) देता है (होता) दाता (मन्द्र:) स्तुति के योग्य (जनानाम्) लोगों के लिए (मधो:) मधु के (न) समान (पात्रा) पात्रों के (प्रथमानि) मुख्य (अस्मै) इस (प्र) उत्तम (स्तोमा) स्तुति (यन्तु) प्राप्त हो (अग्नये) परमेश्वर के लिए।

भावार्थ-परमेश्वर ही सारे धनों को देने वाला दाता है। वही स्तुति के योग्य है। वहीं लोगों के लिए मधु के समान पात्रों द्वारा धन देता है।

ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता।

उर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाधदिभर्वि ह्वयामहे।।

साम. सं. मं. 57

अर्थ-(उर्ध्व:) सर्वोपरि (ऊ) पाद पूरक (षु) उत्तम (न:) हमारी (ऊतये) रक्षा के लिए (तिष्ठ) वर्तमान रह। (देव:न) देव के समान (सविता) सूर्य (ऊर्ध्व:) उपस्थित (वाजस्य) अन्न का (सनिता) दाता (यत्) क्योंकि (अञ्जिभि:) ज्ञानी (वाधद्भि:) उपासकों के साथ (विह्वयामहे) आह्वान करते हैं।

भावार्थ-हे प्रभो! तू अन्न का दाता सर्वोपरि विराजमान है। हमारी रक्षा के लिए तू सदैव सूर्य के समान उपस्थित रह क्योंकि ज्ञान उपासकों के साथ हम तेरी पुकार करते हैं।

उपास्य-उपासक

नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्।

सुवीरमग्न आहुत।।

सामवेद मं सं. 26

अर्थ-(नि) निरन्तर (त्वा) तुझ (नक्ष्य) हे उपास्य देव (विश्पते:) हे प्रजा के स्वामी (द्युमन्तम्) तेजस्वी (धीमहे) धारण करते हैं। (वयम्) हम लोग (सुवीरम्) उत्तम शक्तिशाली (अग्ने) हे ईश्वर (आहुत) हे स्तुति योग्य।

भावार्थ-हे प्रजा के स्वामी उपासनीय स्तुति योग्य परमेश्वर! हम लोग तुझ तेजस्वी, बलशाली को धारण करते हैं।

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरय:।

यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वः दयन्त गोनाम्।। साम. मं.सं. 38

अर्थ-(त्वे) तेरे (अग्ने) हे परमेश्वर (स्वाहुत:) हे उपास्य (प्रियास:) प्रिय (सन्तु) हो। (सूरय:) विद्वान् जन (यन्तर:) वशी (ये) जो (मघवान:) यज्ञ करने वाले (जनानाम्) मनुष्यों के (ऊर्वम:) समूह पर (दयन्त) दया करते हैं (गोनाम्) गाय आदि के।

भावार्थ-हे परमेश्वर! हे उपास्य देव। जो यज्ञ कर्ता और वशी विद्वान् मनुष्यों और गायों के समूह पर दया करते हैं वे तेरी प्रजा होते हैं।

स्वामी-सेवक

पुरू त्वा दाशिवाँ वोचेऽरिरग्ने तवस्विदा।

तोदस्येव शरण आ महस्य।।

सामवेद मं. सं. 97

अर्थ-(पुरू) पूर्ण (त्वा) तेरी (दाशिवान्) समर्पण करने वाला (वोचे) स्तुति करता है। (अरि) स्वामी (अग्ने) हे परमेश्वर! (तव स्वित्) तेरी ही (तोदस्य) कूप के (इव) समान (शरणे) शरण में (आ) भली-भांति (महस्य) महान् परमेश्वर! तू सबका स्वामी है। अत: पूर्णता आत्म समर्पण करने वाला मैं महान् कूप के समान तुझ प्रभु की शरण में स्थित होकर तुझे पुकारता हूँ।

क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्।

स नो वसून्या भरत्।।

सामवेद मंत्र सं. 190

अर्थ-(क:) कौन (इमम्) इस (नाहुषीषु) कर्म बन्धन में बंधी हुई मनुष्य प्रजाओं में (इन्द्रं) जीव को (सोमस्य) भोग्य पदार्थ से (सर्पयात्) तृप्त करता है। (स) वह (न:) हमें (वसूनि) धन से (आभरत्) पूर्ण करता है।

भावार्थ-कर्म बन्धन से बंधी हुई मनुष्य प्रजाओं में वर्तमान जीव को भोग्य पदार्थ से कौन तृप्त करता है? ईश्वर ही भोग्य पदार्थ से तृप्त करता है।

राजा-प्रजा

अयमु ते यमतसि कपोत इव गर्भधिम्।

वचस्तच्चिन्न ओहसे।।

सामवेद मंत्र संख्या 183

अर्थ-(अयम्) यह जीव (उ) पादपूरक (ते) तेरा (समतसि) निरन्तर प्राप्त होता है (कपोत) कबूतर के (इव) समान (गर्भधिम्) कबूतरी के समान प्रकृति को (वच:) शिक्षा वचन (तत्) उस (चित्) ही (न) नहीं (ओहसे) सुनता है।

भावार्थ-हे परमेश्वर! तुम्हारी प्रजा यह जीव गर्भ धारण करने वाली कबूतरी को कबूतर के समान भोगों को गर्भ में धारण करने वाली प्रकृति को बार-बार प्राप्त होता है। इस कारण शिक्षा वचनों को नहीं सुनता है।

यदिन्द्र नहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

वेदवाणी

उस पर श्रद्धा करो

यं स्मां पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विजइवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः।।

-ऋ० २।१२।५; अथर्व० २०।३४।५

ऋषि-**गृत्समदः**।। देवता-**इन्द्रः**।। छन्दः-**त्रिष्टुप्**।।

विनय-मनुष्य जब गम्भीरतापूर्वक उस परमेश्वर की सत्ता पर विचार करने लगते हैं तो उनमें से कोई पूछते हैं 'वह ईश्वर कहाँ है' जिसने इस बड़े भोगदायक संसार में दुःख, दर्द, मृत्यु आदि पैदा करके लोगों का रसभङ्ग कर रखा है, जो बड़े-बड़े दुष्टों का दलन करने वाला तथा अपने वज्र से पापों का संहार करने वाला कहा जाता है, उस घोर भयङ्कर ईश्वर के विषय में वे पूछते हैं कि 'वह कहाँ है ?' 'हमें बताओ वह कहाँ है?' दूसरे कुछ भाई निश्चय ही कर लेते हैं कि 'ईश्वर-वीश्वर कोई नहीं है।' 'बीसवीं शताब्दी में ईश्वर तो अब मर गया है'-'ईश्वर केवल अज्ञानियों के लिए है', परन्तु हे मनुष्यो! तनिक सावधानी से देखो! सत्य को खोजो और इसे धारण करो। देखो! वे पुरुष जो अपनी समझ में प्रकृतिमय ईश्वरविहीन संसार में रहते हैं, अतः जो इस जगत् में जिस किसी प्रकार सुखभोग करना ही अपना ध्येय समझते हैं और स्वाभावतः विपरीतगामी होकर धर्म, दया आदि के सत्यमार्ग को तिरस्कृत कर निरन्तर अपनी पुष्टि की ही धुन में लगे रहते हैं, अर्थात् धनसंग्रह, स्त्री, पुत्र, प्रतिष्ठा, प्रभाव आदि से अपने को समृद्ध और पुष्ट करते जाते हैं, उन 'अरि' नामक स्वार्थी लोगों के सामने भी एक समय आता है जबकि उनका यह सांसारिक भोग का खड़ा किया हुआ। सब महल एकदम न जाने कैसे गिर पड़ता है। उनके जीवन में एक भूकम्प-सा आता है, उन्हें एक प्रबल धक्का लगता है। उनकी वह सब भौतिक-तुष्टि क्षण में मिट्टी हो जाती है, सब ठाठ गिर पड़ता है। उस समय बहुत बार उनका अभिमान नष्ट होता है और वे नम्र होते हैं। कल्याणकारी है वह धक्का, कल्याणकारी है। उनका वह सर्वनाश, यदि वह उन्हें नम्र बनाता है और धन्य हैं वे पुरुष जिन्हें यह कल्याणकारी धक्का लगता है, क्योंकि वहीं पर प्रभु के दर्शन हो जाया करते हैं। हे मनुष्यो! वह ईश्वर आँख से दीखने की वस्तु नहीं है, उसे तो श्रद्धा की आँख से देखो। जो मनुष्यों की बड़ी-बड़ी योजनाओं को पलक झपकने में बदल जेता है, कुछ-का-कुछ कर देता है; जिसके आगे अल्पज्ञ मनुष्य का कुछ बस नहीं चलता, तनिक उसे देखो, नम्र होकर उसे देखो; वही परमेश्वर है।

आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर जालन्धर का 40 वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव दिनांक 10 मई 2018 से 13 मई 2018 तक बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन तथा भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के मधुर भजन होंगे। कार्यक्रम 10, 11, 12 मई को रात्रिकालीन रहेगा जिसमें 7:00 से 10:00 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन होंगे। 13 मई रविवार को विशेष कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व शान्ति महायज्ञ के साथ किया जाएगा जिसके ब्रह्मा पं. विजय शास्त्री जी तथा मुख्य यजमान श्री निर्मल आर्य जी होंगे। 9:45 बजे ध्वजारोहण श्री तरसेम लाल, मैनेजर युको बैंक के द्वारा किया जाएगा। अल्पाहार के पश्चात 11:00 से 2:00 बजे तक श्री सरदारी लाल आर्य वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में आर्य महासम्मेलन होगा जिसमें बहुत से गणमान्य अतिथि भाग लेंगे। आप सभी अपने परिवार एवं ईष्टमित्रों सहित इस कार्यक्रम में भाग लेकर अपने जीवन को लाभान्वित करें।

-वेद आर्य महामन्त्री आर्य समाज आर्य नगर

पृष्ठ 5 का शेष-सामवेद में ईश्वर...

यद्वा पञ्च क्षितानां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौंस्या।।

साम. मं. सं. 262

अर्थ-(यत्) जो (इन्द्र) ईश्वर! (नाहुषीषु) मानुषी (ओजः) बल (नृम्णम्) सम्पत्ति (च) और (कृष्टिषु) प्रजाओं में (यत्) जो (वा) अथवा (पञ्च क्षितीनाम्) योग की पांच भूमियों के (द्युम्नम्) यश हैं (आभर) वे (सत्रा) सत्य (विश्वानि) सब (पौंस्या) पुरूषार्थ।

भावार्थ-हे परमेश्वर! मनुष्य प्रजा में जो बल तथा धन है अथवा योग की पांच भूमियों में जो यश है उनको और सच्चे पुरूषार्थ को भी हमें दें।

व्यापक और व्याप्त-

प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत।
सखायः सोम पाव्ने।।

साम. मं. सं. 156

अर्थ-(प्र) उत्तम (वः) तुम लोग (इन्द्राय) इन्द्र के लिए (मादनम्) आनन्द दायक (हर्यश्वाय) मनुष्य की आत्माओं में व्यापक (गायत) गान करो (सखायः) हे मित्रों। (सोमपाव्ने) आनन्द के रक्षक के लिए।

भावार्थ-हे मित्रों! जो ईश्वर मनुष्य की आत्माओं में व्यापक है तथा आनन्द का स्त्रोत है। उसका आनन्द दायक स्वर में गान करो।

पतितपावन-पतित

आ नो-पतित अग्ने वयो वृध रयिं पावक शंस्यम्।
रास्वा च न उपमाने पुरूस्पृहं सुनीती सुयशस्तरम्।।

साम. मं. सं. 43

अर्थ-(आ) भली (नः) हमें (अग्ने) हे परमेश्वर (वयोवृधम्) आयु बढ़ाने वाले (रयिम्) धन को (पावकः) पतित पावन। (शंस्यम्) प्रशंसनीय (रास्वा) दे (च) और (नः) हमारी (उपमाते) हे सृष्टि कर्ता (पुरूस्पृहं) बहुतों से चाहने योग्य (सुनीती) अच्छी नीति से प्राप्त होने वाले (सुयशस्तरम्) यश का विस्तार करने वाले।

भावार्थ-हे सृष्टि कर्ता, पतितपावन परमेश्वर! तू हमें हमारी अच्छी नीति से प्राप्त होने वाले आयु वर्धक, प्रशंसा के योग्य यश बढ़ाने वाले और बहुतों द्वारा चाहने योग्य धन प्रदान कर।

कर्म फल प्रदाता-कर्म फल पाने वाला

न तस्य मायया च न रिपुरी-शीत मर्त्यः।
यो अग्नये ददाश हव्य दातये।।

साम. मं. सं. 104

अर्थ-(न) नहीं (तस्य) उसका (मायया) छल से (चन) भी (रिपुः) शत्रु (ईशीत) कुछ बिगाड़ सकता है। (मर्त्सः) मनुष्य (यः) जो (अग्नये) परमेश्वर की शरण में (ददाश) अपने को समर्पित कर देता है (हव्यदातये) कर्म फल प्रदाता।

भावार्थ-जो पुरूष कर्म फल दाता परमेश्वर की शरण में अपने को समर्पित कर देता है। उसका कोई मनुष्य शत्रु कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

प्रेरक-प्रेरित-

उद्धेदभिश्रुतामधं वृषभ नर्यापसम्।
अस्तारमेषि सूर्य।।

साम. मं. सं. 125

अर्थ-(उत्) ऊपर (ह) प्रसिद्ध (इत्) ही (अभि) सब प्रकार (श्रुतामधम्) विख्यात धनी (वृषभम्) याचक की मांग को पूर्ण करने वाले (नर्यापसम्) मनुष्य मात्र के हित करने वाले (अस्तारम्) उदार पुरूष को (एषि) उठाता है (सूर्य) हे सर्व प्रेरक ईश्वर!

भावार्थ-हे सर्व प्रेरक ईश्वर! विख्यात धनी याचकों की मांग पूरी करने वाले मनुष्य मात्र के हितात चिन्तक और उदार पुरूष को तू अवश्य उन्नत करता है।

मित्रता का सम्बन्ध

आधा ये अग्निमन्धिते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्।
येषामिन्द्रो युवा सखा।।

सामवेद मंत्र संख्या 133

अर्थ-(आ) सब प्रकार (घ) (प्रसिद्ध) (ये) जो लोग (अग्निम्) तेजस्वी ईश्वर को (इन्धते) अपनी आत्मा में प्रकाशित करते है। (स्तृणन्ति) विस्तार करते हैं (बर्हिः) ज्ञान का (आनुषक्) निरन्तर (येषां) जिनका (इन्द्रः) ईश्वर (युवा) अजर (सखा) मित्र है।

भावार्थ-सब प्रकार से प्रसिद्ध जो लोग ईश्वर को अपनी आत्मा में प्रकाशित करते हैं। ज्ञान का निरन्तर विस्तार करते हैं। ईश्वर उनका मित्र है।

इस प्रकार हमने सामवेद के आधार पर ईश्वर जीव सम्बन्ध पर संक्षेप में जानने का प्रयत्न किया है।

पृष्ठ 2 का शेष-सत्यार्थ प्रकाश के सभी समुल्लास..

हो गया। हमारा देश आर्यावर्त भी इससे अछूता न रहा। वेद शिक्षा के विरुद्ध कई कपोल्कल्पित मत पंथ आर्यावर्त में चल पड़े और इन मत मतांतरों की कई शाखाएँ और प्रतिशाखाएँ फूट निकलीं। जिसने कि हमारे आर्यावर्त में मनुष्यों के बीच में कई लकीरें खींच डालीं, वर्णव्यवस्था विकृत होकर जातिवाद में बदल गई। ऐसे ही कितने गुरु, अवतार, बाबा, संत आदि अपने आधार पर कई मत पंथ बनाते गए और लोगों को वेद की शिक्षा से कोसों दूर ले गए। इस समुल्लास में ऋषि दयानंद ने इन्हीं सब पंथों आदि की अवैदिक मान्यताओं का खंडन करके वेद मत का मंडन किया है। क्योंकि इन पंथों ने लोगों को ईश्वर के दर्शन करवाने का ठेका ले लिया था और हर पंथ मात्र अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाने में ही लगा था। इसी धार्मिक फूट के कारण हमारा देश 3000 वर्षों में बहुत निर्बल हुआ और 1200 वर्षों तक विदेशियों से पराधीन होकर जूझता रहा। इसी फूट की समीक्षा करके मात्र एक वेद स्थापित करने के उद्देश्य से ऋषि ने ये समुल्लास लिखा।

12. (१२.) **द्वादश समुल्लास**-ये समुल्लास भारत में पनपे वेद विरोधी नास्तिक बौद्धमत, जैनमत, चारवाक आदि के खंडन में है क्योंकि आर्यावर्त में बाकी जितने मत मतान्तर पैदा हुए। उनमें से अधिकांश तो ईश्वर और वेद को आंशिक रूप में किसी न किसी रूप में मानते थे परन्तु ये जैन, बौद्ध मत तो नितान्त नास्तिक और उग्र वेद विरोधी मत थे। इसी कारण बहुत से बौद्धों ने ब्राह्मणों और क्षत्रियों से घृणावश होकर देश द्रोह तक किया और मुसलमान आक्रमणकारियों की पूरी सहायता करते हुए उनको अपने बौद्ध विहारों में ठहराया और आर्य हिन्दू राजाओं के राज्यों के गुप्त पते बताते हुए उन पर आक्रमण करने में पूरा सहयोग किया। इस समुल्लास में ऋषि दयानंद ने मुख्य बौद्ध, जैन, चारवाक आदि ग्रंथों के साक्ष्य उठाकर उनके अनीश्वरवाद का खंडन प्रबल युक्तियों से किया है और वेद के आस्तिकवाद का मंडन बड़े सुंदर ढंग से किया है।

13. (१३.) **त्रयोदश समुल्लास**-भारत में अंग्रेज़ों ने वैटिकन के ईशारे पर यहाँ की हिन्दू जनता को ईसाई बनाने के लिये जीतोड़ प्रयास किए। इसलिये यहाँ ग्रामीण अनपढ़ लोगों को ईसाई बनाने हेतु ये ईसाई पादरी और पास्टर गाँव गाँव बाईबल लेकर घूमा करते थे और हिन्दू देवी देवताओं की निंदा करते और यीशू मसीह की महानता बताते रहते थे। इस कार्य के लिये अंग्रेज़ों द्वारा पानी की तरह पैसा बहाया जा रहा था। ऋषि दयानंद जी ने इनकी मान्य पुस्तक बाईबल उठाकर उसकी चुनिंदा आयतों की समीक्षा की और बाईबल का जंगलीपन, निकृष्टता को लोगों के सामने खोलकर रखा और ये सिद्ध किया कि विदेश में पनपा ईसाई मत भारत के लोगों के योग्य नहीं है। इसलिये ये समुल्लास ईसाई मत खंडन पर लिखा ताकि सभी मनुष्य बाईबल की ऊटपटांग बातों को बुद्धिपूर्वक पढ़ें और तुलनात्मक रूप से वैदिक धर्म की श्रेष्ठता को स्वीकार करें। बहुत से ईसाई लोग और पादरी इस समुल्लास को पढ़कर ईसाई मत त्यागकर वैदिक धर्मी हो चुके हैं।

14. (१४.) **चतुर्दश समुल्लास**-अरब में पनपी इस्लाम की विचारधारा शुरू से ही हिंसा पर आधारित रही है। इस्लाम के संस्थापक पैगम्बर माने जाने वाले मुहम्मद साहब हैं। जिन्होंने मक्का में जन्म लिया था। उनके अनुयायियों और खलीफाओं ने अरबी साम्राज्य के विस्तार के उद्देश्य से इस्लाम को मज़हब यानी की एक संप्रदाय बनाया। इस्लाम में अनेकों प्रकार के फिरके हैं। इन सबकी मान्य पुस्तक एक ही कुरान है। भारत में हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के उद्देश्य से कुरान के मानने वालों ने 678 ई. से लेकर अब तक यहाँ भीषण अत्याचार किए हैं। पूरी दुनिया में हो रही आंतकवादी घटनाएँ, सीरिया, इराक, यमन आदि में हो रहा गृहयुद्ध और सामूहिक रक्तपात कुरान की इसी वहाबी विचारधारा से प्रेरित है। इसलिये ऋषि दयानंद ने इस समुल्लास में लगभग 200 से ऊपर कुरान की आयतें उठाकर उनकी समीक्षा की और समझने का प्रयास किया। ऋषि ने ये समुल्लास किसी को चिढ़ाने के लिये नहीं बल्कि मुसलमानों के लिये विचार करने के लिये लिखा है। मुस्लिम संगठनों द्वारा इस समुल्लास का विरोध भी हुआ परन्तु ऋषि के तर्कों को काटने का साहस किसी में भी आज तक न हुआ। सत्यार्थ प्रकाश का खंडन लिखने की भूल करने वाले बहुत से मौलवी और मुफ्ती स्वयं ही वेद की विचारधारा से प्रभावित होकर इस्लाम छोड़ बैठे और शुद्धि करवाकर वेद प्रचारक तक बन गए।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज नंगल...

ने जगदीश चन्द्र वसु व अन्य बुद्धिजीवियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। आयोजकों ने बताया कि आर्य समाज नंगल की ओर से समय समय पर धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करके प्राणी मात्र को संस्कारवान बनाने के लिये वेद ग्रंथों के उपदेश से जीवन यापन करने की प्रेरणा दी जा रही है।

कार्यक्रम में चण्डीगढ़ से पधारे सुशील भाटिया, श्री ओ.पी. खन्ना, कर्ण खन्ना, राजीव खन्ना, राजी खन्ना, अध्यक्ष सुरेन्द्र मदान, प्रेम सागर, योगाचार्य श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, रछपाल राणा, राजीव भदौरिया, सुरेन्द्र कांत, अशोक बाली, जी.सी. तलुजा, शाम सुन्दर सैनी, विजय कुमार शर्मा, सेवा निवृत्त डी.एस.पी. मेहर चन्द राणा, कर्ण खन्ना, सतीश कौशल, स्नेह लता पाठक, नरेश सहगल, आशा अरोडा, प्रमोद अग्निहोत्री, जे.पी. शारदा, रजनी, सुरेन्द्र शास्त्री, पुरोहित कृष्ण कांत शर्मा, योगाचार्य तरसेल लाल, दीवान चंद शर्मा, नंद लाल सोहल आदि भी मौजूद थे।

-मंत्री आर्य समाज नंगल

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद...

मंच संचालन किया। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं लेखक आर्य कवि पं०-सत्यपाल पथिक जी ने आर्य समाज के गौरवमय इतिहास की चर्चा की। इस सुअवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा रजि० पंजाब के आर्य-भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी ने अपने $1^1/_2$ घण्टे के विशेष कार्यक्रम में खचाखच भरे आर्य समाज प्रांगण को अपने रंग में रंग लिया। अपने मधुर भजनों से वर्मा जी ने सबका मन मोह लिया। तत्पश्चात् कार्यक्रम के मुख्यवक्ता स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती आत्म प्रज्ञाआश्रम बाघनी नूरपुर जी का ओजस्वी भाषण हुआ। स्वामी वेद प्रकाश जी ने आये हुए लोगों को आहवान किया कि आप सभी इस आर्य समाज आन्दोलन में तन मन धन के साथ समर्पित रहे। ताकि वैदिक धर्म एवं वेद का प्रचार जन जन तक पहुंच सके। आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी ने आये हुए सभी मेहमानों का धन्यवाद किया। इस मौके पर शहर की सभी आर्य समाजों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। आर्य समाज लारेंस रोड़ से प्रधान श्री अरुण महाजन, दमन शर्मा ओम प्रकाश दिलावरी, राकेश मेहरा, ललित जौहरी, हरीश ओबराय, आर्य समाज फतेहगढ़ चूड़ियां के प्रधान श्री विजय कुन्दरा, सतीश सच्चर, आर्य समाज शक्तिनगर से दिनेश आर्य, पदम प्रकाश मेहरा आर्य समाज माडल टाऊन से प्रधान देशबन्धु धीमान, रमेश चन्द्र, माता कमलेश चोपड़ा, माता जगदीश रानी आर्या, आर्य समाज लक्ष्मणसर से प्रधान इन्द्रपाल आर्य, अनिल और उनके साथी आर्य समाज नवांकोट से श्री बालकिशन भगत, बेटी शिवानी आर्य समाज पुतलीघर से प्रधान इन्द्रजीत तलवाड़, विरेन्द्र शर्मा, मुरारीलाल आर्य, आर्य समाज हरिपुरा के प्रधान दीनानाथ, मेलाराम आर्य समाज अजनाला से श्री मुकेश शर्मा, आर्य समाज मेहरपुत्र खजान सिंह आर्य समाज जंडियाला गुरु श्री स्वतन्त्रकुमार और उनके सभी साथी, आर्य समाज गढ्ढा सिंह वाला, आर्य समाज इन्द्राकालोनी शहर की सभी स्त्री समाजें एवं वैदिक गर्ल्ज सी० सै० स्कूल से अनु बहल, रजनी अरोड़ा, नविता भाटिया, श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय से सुश्री मनवीर कौर, सुखजीत, विद्या सागर, आचार्य पवन कुमार, संजय गोस्वामी, रविदत आर्य, पवन टण्डन, बलराज जुली, योगाचार्य राज कुमार, डॉ. रविकांत शर्मा, सलिल कपूर, पुनीत सेठ, मनु सेठ, राम चोपड़ा, कृष्ण कुमार, माधुरी सहगल, वीना मेहरा, आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्य श्री पुरूषोतम चन्द शर्मा, समाज सेवक राम नरेश आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। शान्तिपाठ के साथ यज्ञशेष (प्रीतिभोज) के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-डॉ. पवन कुमार त्रिपाठी
वेद प्रचार मन्त्री आर्य समाज

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018–20 RNI No. 26281/74

आर्य समाज नंगल का 68वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

रविवार 6 मई 2018 को आर्य समाज नंगल जिला रोपड़ के 68वें वार्षिक उत्सव पर पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री विनोद भारद्वाज जी एवं मंत्री श्री रणजीत आर्य जी। उनके साथ खड़े हैं आर्य समाज नंगल के पदाधिकारी एवं सदस्य। जबकि चित्र दो में उपस्थित जनसमूह

आर्य समाज नंगल का 68वां वार्षिक उत्सव रविवार 6 मई 2018 को बड़े हर्षोल्लास व भक्तिमय वातावरण में सम्पन्न हो गया। तीन दिवसीय कार्यक्रम में विद्वानों ने यह बताने के प्रयास किया कि जीवन का हर पल अनमोल है। इसे प्रभु के सिमरन व अच्छे कार्यों में बिताना चाहिये। पानीपत से उच्चकोटि के विद्वान पंडित जगदीश चन्द्र वसु ने कहा कि वेद ग्रंथों के उपदेशों में ही कल्याण व प्राणी मात्र की समृद्धि समाई है। इसलिये जीवन में हमेशा साधु संतों व विद्वानों से मार्ग दर्शन जरूर प्राप्त करते रहना चाहिये।

मुख्य समारोह 6 मई 2018 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री रणजीत आर्य विशेष रूप से इस कार्यक्रम में उपस्थित हुये और इस आर्य समाज के पदाधिकारियों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर श्री विनोद भारद्वाज जी सभा मंत्री जी ने अपना संबोधन देते हुए कहा कि हमारी संस्कृति के मूल आधार वेद हैं तथा वेद एक विचारधारा है जिसमें मनुष्य के सर्वांगीण विकास के पहलुओं का समावेश है। हमें इन उत्सवों के माध्यम से इसी उत्कृष्ट विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाना है। उन्होंने आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं को उत्साह से आर्य समाज का कार्य करने का आह्वान किया।

श्री रणजीत आर्य जी ने कहा कि हमें आर्य समाज में साप्ताहिक सत्संगों में अधिक से अधिक लोगों को अपने साथ आने के लिये प्रोत्साहन करना चाहिये। उन्होंने कहा कि साप्ताहिक सत्संगों में नित नये नये यजमान बनाने से आर्य समाज के साथ आम लोग भी जुड़ेंगे जिससे आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार बढ़ेगा। कार्यक्रम में आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य आसकरण दास सरदाना के अलावा ओम प्रकाश खन्ना, आर्य समाज के प्रधान श्री सुरेन्द्र मदान, महासचिव सतीश अरोडा, सतपाल जौली आदि ने भी वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में पहुंचे बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिये उपदेश दिये व अच्छा कार्यक्रम पेश करने वाले बच्चों को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से पधारे पदाधिकारियों के हाथों सम्मानित किया गया। समापन अवसर पर आर्य समाज के सदस्यों (शेष पृष्ठ सात पर)

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर का शताब्दी समारोह मनाया

दिनांक 29 अप्रैल 2018 को आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द का शताब्दी समारोह आर्य समाज के प्रांगण में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन एवं उपस्थित जनसमूह।

दिनांक 29 अप्रैल 2018 को आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर का शताब्दी समारोह आर्य समाज के प्रांगण में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज के माननीय प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी ने की।

आर्य समाज भवन बाजार श्रद्धानन्द का शिलान्यास आज से सौ (100) वर्ष पूर्व 28 अप्रैल 1918 को आर्य जगत के तपस्वी सन्त श्रद्धेय स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती जी के कर–कमलों से सम्पन्न हुआ। तत्कालीन इस आर्य समाज के सर्वप्रथम प्रधान श्री जगन्नाथ जी एवं श्री कैप्टन केशव चन्द्र जी मन्त्री नियुक्त हुए। इस आर्य समाज ने वैदिक धर्म एवं सामाजिक क्षेत्र में समाज के प्रति अपने–अपने कर्तव्यों को निभाने की जागृति हेतु बढ़–चढ़ कर कार्य किया। 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड को लोग अभी भूल नहीं पाये थे कि कांग्रेस ने एक अधिवेशन करने की घोषणा कर दी। ऐसे समय में अधिवेशन की स्वागत समिति का अध्यक्ष कोई भी बनने को तैयार नहीं था। ऐसी विकट परिस्थिति में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के कृपापात्र, आर्य जगत के निर्भीक सन्यासी, अमर बलिदानी, स्वतन्त्रता सेनानी सर्वमान्य आर्य नेता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने इस स्वागत समिति के अध्यक्ष पद को अलंकृत किया था। स्वामी जी आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर से चल कर अधिवेशन स्थल (गोलबाग) पहुंचे और पहली बार उन्होंने अध्यक्षीय भाषण हिन्दी में दिया। तभी से इस बाजार और आर्य समाज का नामकरण भी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के नाम पर किया गया। जिसे आज सभी बाजार श्रद्धानन्द के नाम से जानते हैं। सन् 1975 को आर्य समाज का शताब्दी समारोह अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भारत की राजधानी दिल्ली में आयोजित किया गया। एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर से कई बसें भर कर गई और इस आर्य महासम्मेलन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर ने अनेकों विद्वान, सन्यासी वेद प्रचारक एवं कर्मठ आर्य नेता प्रधान इस राष्ट्र को दिए जिन्होंने देश–विदेश में ऋषि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज आन्दोलन एवं क्रांतिकारी विचारों को आगे बढ़ाया। इस विशाल कार्यक्रम का शुभारम्भ बृहदयज्ञ से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक प्रवक्ता पं० पवन त्रिपाठी जी थे। वेद पाठ आर्य समाज के पुरोहित पं० तेजनारायण शास्त्री, पं० सिकन्दर शास्त्री, पं० निरुजनदेव ने किया।

आर्य समाज के महामन्त्री शशी–कोमल जी ने स्वागत गीत के माध्यम से इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। आर्य समाज के वेद प्रचार मन्त्री डॉ. पवन कुमार त्रिपाठी जी ने इस विशाल कार्यक्रम का (शेष पृष्ठ सात पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।